nternational Journal of Research
ɔecial Issue for UGC Approved Journal-Hindi Papers
ɤailable at https://edupediapublications.org/journals
e-ISSN: 2348-6848
p-ISSN: 2348-795X
Volume 04 Issue 15
November 2017

राष्ट्रीय एकीकरण और अन्तर्राष्ट्रीय आतंकवाद

मलखान सिंह
एम०फिल्०,
राजनीति विज्ञान
कुरुक्षेत्र विश्वविद्यालय,
कुरुक्षेत्र ।

भूमिका :

भारत ने ऐसे राज्य को विरासत में पाया जो ब्रिटिश भारतीय प्रान्तों तथा बड़ी संख्या में अर्द्ध-स्वायत रियासतों में बंटा हुआ था। कठिनाई उस समय उत्पन्न हुई। जब 565 रियासतों का प्रश्न आया। यद्यपि उनमें से अधिकतर ने (तीन को छोड़कर) संघीय भारत में सम्मलित होना स्वीकार कर लिया । ये तीन राज्य जूनागढ़, हैदराबाद तथा कश्मीर थे । हिन्दू बहुल जूनागढ़ काठियावाड़ क्षेत्र का एक छोटा-सा राज्य था । जहां मुस्लिम शासक जिसने पाकिस्तान में शामिल होना स्वीकार कर लिया था। लेकिन भारतीय सेना के छोटे से संघार्ष के बाद शासक पाकिस्तान भाग गए और जूनागढ़ को लोकनिर्णय से भारत में शामिल कर लिया गया । हैदराबाद का शासक निजाम था और वह भी पाकिस्तान में शामिल होने के पक्ष में था । सितम्बर 1948 में भारतीय सेना ने एक ऑपरेशन चलाकर हैदराबाद को भारतीय संघ में मिलवा दिया । लेकिन कश्मीर को संभालना आसान नहीं था । स्वतन्त्रता के पश्चात् कश्मीर के शासक हरिसिंह स्वतन्त्र रहना चाहते थे, जिससे नेहरु के मन्त्रिमण्डल में कोई भी सहमत नहीं था । उत्तरी-पश्चिमी सीमा प्रान्त के पठान कबीलों के आक्रमण के कारण कश्मीरी शासक को सुरक्षा के लिए भारतीय सेना की मदद लेनी पड़ी । इससे ऐसी परिस्थितियां उत्पन्न हुई, जिससे हरिसिंह के पास भारत के साथ अधिग्रहण समझौते के

हलावा कोई भी विकल्प नहीं बचा[1] परंतु लौह पुरुष सरदार पटेल की कुशल नीति के कारण सारी रियासतें भारत में शामिल हो गई। राष्ट्रीय एकीकरण के लिए सम्मेलन का आयोजन किया गया । प्रधानमंत्री जवाहरलाल नेहरु के संयोजन में देहली में विज्ञान भवन में सन् 1962, 28 सतम्बर से 1 अक्तूबर तक राष्ट्रीय एकीकरण सम्मेलन बुलाया गया ।[2] लेकिन राष्ट्रीय एकीकरण की समस्या अभी भी बनी हुई ।

भारत और पाकिस्तान के मध्य कश्मीर हमेशा से एक विवाद का विषय रहा है । पाकिस्तान ने कश्मीर को भारत से अलग करने के लिए हमेशा आतंकवादी गतिविधियों का प्रश्रय दिया । यही कारण रहा है कि धरती का स्वर्ग और पूर्व का स्विटजरलैण्ड कहा जाने वाला कश्मीर आज आतंकवाद की अग्नि में धधक रहा है । भारत-पाकिस्तान द्वारा जम्मू-कश्मीर राज्य पर हुए हमले के मामले को 1 जनवरी 1948 को संयुक्त राष्ट्र संघ में ले जाया गया और संयुक्त राष्ट्र के संघ के हस्तक्षेप से युद्ध विराम की घोषणाा हो गई। लेकिन तब तक पाकिस्तान जम्मू-कश्मीर की 83294 वर्ग किलोमीटर भूमि पर कब्जा कर चुका था । पाकिस्तानी सैनिकों को बिना धकेले ही यह युद्ध विराम रेखा की घोषणा से राज्य क्षेत्र का लगभग चालीस प्रतिशत भाग पाकिस्तान के कब्जे में चला गया जो निम्न आंकड़ों से स्पष्ट होता है- कुल क्षेत्रफल 2,22,236 स्क्वायर कि०मी० पाकिस्तान द्वारा कब्जा किया गया-78114 स्क्वायर कि०मी, पाकिस्तान द्वारा चीन को दिया गया- 5,180 स्क्वायर कि०मी० चीन द्वारा हड़प्पा गया- 37,555 स्क्वायर कि०मी०। अगर कश्मीर में आतंकवाद की बात करें तो इसका सन् 1989 में प्रथम चरण प्रारम्भ हुआ । पाकिस्तान सन् 1947-48, 1965 तथा 1971 के प्रत्यक्ष युद्ध में कश्मीर को हड़पनें में विफल हो गया ।

nternational Journal of Research
ɔecial Issue for UGC Approved Journal-Hindi Papers
vailable at https://edupediapublications.org/journals
e-ISSN: 2348-6848
p-ISSN: 2348-795X
Volume 04 Issue 15
November 2017

जम्मू-कश्मीर विधानसभा द्वारा जारी अधिकृत आंकड़ों के अनुसार सन् 1990 से जुलाई 2009 तक 47,000 लोग आतंकी गतिविधियों में मारे गए एवं 3400 लोग लापता हो गए । वर्ष 2012 में जम्मू और कश्मीर में 220 आतंकवादी घटनाएं हुई, जिसमें से 15 सुरक्षाबलों की मौत और 15 नागरिकों की मौत और 72 आतंकवादियों की मौत हुई ।[3] वर्तमान समय में भी कश्मीर से भारत में आतंकवादी घटनाएं होती रहती है । भारतीय सेना पर कश्मीरी नागरिकों के द्वारा पत्थरबाजी की जाती है । हिंसक घटनाएं भी कश्मीर में काफी देखी जाती है । कश्मीर में सक्रिय आतंकवादी संगठन पाएं जाते है जिसमें हिजबुल मुजाहिदी, लश्करें तोइबा, जैश-ए-मोहम्मद मुजाहिदीन ई० तंजीम, जमायतें-उल-मुजाहिदीन इत्यादि ।

राष्ट्रीय एकीकरण :

भारत में आतंकवाद की चपेट में आ चुका है। भारत के विभिन्न हिस्सों में फैले आतंकवाद का दुर्भाग्यपूर्ण पहलू यह है कि यहां के आतंकवाद को पाकिस्तानी खुफिया एजेंसी, आई०एस०आई० बढ़ावा दे रही है । वहीं आतंकवादियों को हिंसा का प्रशिक्षण देती है और वहीं उन्हें हथियार और गोला-बारूद मुहैया कराती है। आतंकवाद के अलावा भारतीय भू-भाग के कुछ हिस्से नक्सलवाद से भी प्रभावित हैं । भारतीय नक्सवाद को भी पाकिस्तानी हुकूमत का प्रश्रय दिया जाता है, जिस कारण नक्सलवाद ने भी अब आतंकवाद का रूप धारण कर लिया है। दक्षिणी और मध्य भारत के कुछ हिस्सों में जो हिंसक गतिविधियां चल रही है । उनका प्रेरणास्त्रोत नक्सलवाद है न कि अलगाववाद । ये नक्सली आतंकवादी हिंसा के बल पर समाजवाद लाना चाहते हैं । पूंजीवाद को हटाना चाहते है चूंकि आतंकवाद का एक उद्देश्य अलगाव भी

है, इसलिए इसके कारण हमारी राष्ट्रीय एकता को भी खतरा पैदा हो गया है। असम के अलगाववादी संगठन 'उल्फा' को म्यामार से पैसा, हथियार और प्रशिक्षण भी मिला है, यह बात अब प्रमाणित हो चुकी है । भारत के उत्तर-पूर्व में आतंकवाद के कारण भारत के सामने राष्ट्रीय एकीकरण की समस्या उत्पन्न हो रही है । त्रिपुरा, मिजोरम, मणिपुर, मेघालय, असम, अरूणाचल प्रदेश और नागलौण्ड जैसे राज्य के उत्तर-पूर्व में बसे हुए है । प्रशासनिक आधार पर ये अलग-अलग राज्य अवश्य है, लेकिन भौगोलिक और सांस्कृतिक आधार पर ये एक ही क्षेत्र है। मिजोरम में हिंसा और उग्रवाद का दौर 1966 के आरम्भ में ही प्रारम्भ हो चुका था, जिसने 1984 आते-आते विकराल रूप धारण कर लिया था। जब मिजो की जनता लालडेंगा के झंडे तले लामबंद होने लगी तो लालडेंगा ने 'मिजो नेशनल फ्रंट' नामक संगठन बना लिया । जिसने अपनी मांगों के समर्थन में हिंसा करनी प्रारम्भ कर दी । लालडेंगा ने अपने लड़कों को सैन्य प्रशिक्षण प्राप्त करने के लिए चीन भेजा और बाद में चीन ने मिजो आतंकवादियों की भरपूर सहायता की । नागालैंड में आतंकवाद की शुरूआत 1970 के आसपास हुई थी । नागा नेशनल कांउसिल (एडिनो) नागालैंड में कार्यरत आतंकवादी संगठन है । त्रिपुरा में आतंकवाद की शुरूआत 1980 में हुई थी । यहां पर आतंकवाद का कारण बांग्लादेश से आए, शरणार्थियों का त्रिपुरा में बस जाना और वहां के लोगों की जमीनें छिनने लगी । जिससे लोगों ने हिंसा का रूप धारण कर लिया । त्रिपुरा जब पूरी तरह हिंसा की चपेट में आ गया तो विदेशी शक्तियों ने भी इस आग में अपने हाथ तापने शुरू कर दिए । इस दौर में अमेरिका गुप्तचर एजेंसी सी०आई०ए० और बांग्लादेश सरकार ने विद्रोहियों को सहायता देनी शुरू कर दी। असम में भी आतंकवाद अपने चरम पर रह

चुका है । 'असम से विदेशियों को बाहर निकालो' की मांग सबसे पहले 'आसू' नामक राजनीतिक संगठन ने की थी । असमियों द्वारा पृथक असम की मांग को पाकिस्तान, बांग्लादेश तथा म्यामार से भी समर्थन मिला । 1991 में असम में सेना द्वारा 'ऑपरेशन राइनो' चलाया । जिसके कारण आतंकवाद को गहरा झटका लगा, हजारों संदिग्ध उग्रवादी दबोचे गए । आज भी असम में सक्रीय आतंकवादी संगठन मौजूद है जिसमें आदम सेना, मुस्लिम टाइगर फोर्स, बंगाली टाइगर फोर्स इत्यादि । मणिपुर राज्य भी हमेशा अशांत ही रहा है। यहां मुख्य संघर्ष नागा और कुकी कबीलों के बीच है । फिलहाल मणिपुर में काफी मात्रा में आतंकवादी संगठन काम कर रहे हैं, जिसमें कुकी नेशनल आर्मी, हमारा पीपुल्स कवेंशन, जोगी रिवोल्युशनरी आर्मी आदि। इन सभी राज्यों के अलावों नक्सलवाद भी कभी-कभी हिंसा का रूप धारण कर लेता है[4], जिससे भारत की राष्ट्रीय एकता को नुकसान हो सकता है । हिंसा को आतंकवाद का रूप माना जाता है। यदि किसी भी देश में आतंकवादी संगठन कायम रहेंगे तो उस राष्ट्र की राष्ट्रीय एकता को खतरा उत्पन्न हो सकता है, लेकिन आतंकवाद और अन्तर्राष्ट्रीय आतंकवाद में अन्तर है । आतंकवाद शब्द के अर्थ के बारे में भी विद्वानों का एकमत नहीं है । हमें पहले आतंकवाद शब्द की उत्पत्ति कहां से हुई इस तथ्य को समझना जरूरी है ।

आतंकवाद शब्द की उत्पत्ति का संक्षिप्त इतिहास :

आतंकवाद के इतिहास को जानना रोचक और महत्त्वपूर्ण है। अमेरिकी अनुसंधानकर्त्ता चेस्टर एल० क्वारलस के अनुसार टेररे (Terror) शब्द व डीटरे (Deterre) लैटिन भाषा के टेररे (Terror) शब्द से निकला है। टेररे का मतलब है 'भयभीत होने के कारण तथा डोटरे का मतलब है 'आंतकित करना' होता है। इस

प्रकार आतंकवाद राजनीति व सरकार को प्रभावित करने का तरीका है । यह कहना तो कठिन है, किन्तु आज इसका स्वरूप दिल दहला देने वाला अवश्य है । आतंकवाद शब्द सर्वप्रथम 1789 फ्रांसीसी क्रांति के समय 'रेन ऑफ टेरर' के संदर्भ में अभिलिखित किया गया है। इसका सर्वप्रथम प्रयोग मॅक्समिलन राबिस्पियरें ने 1789 की काफी फ्रांसीसी क्रांति के बाद आया था । उस समय आतंक को एक राजनीति युक्ति की तरह प्रयोग किया जाता था । लेकिन फ्रांसीसी क्रांति के दौरान विद्रोहियों द्वारा किये गए अत्याचार अधिकता ही हद को पार कर गए थे । संभवतः इसी कारण इस काल को ही आतंक और आतंकवाद के जन्मदाता के रूप में जाना जाता है।

आतंकवाद :

ब्रायन एम० जेनकिन्स ने आतंकवाद की परिभाषा देते हुए स्पष्ट किया है कि "यह हिंसा के प्रयोग की धमकी है, व्यक्ति के हिंसात्मक कार्य अथवा हिंसा का प्रचार है, जिसका उद्देश्य भय के प्रयोग से आतंकित करना है । आतंकवादी अपनी आतंकी गतिविधियों के द्वारा आर्थिक हानि, सामाजिक सुख-शान्ति का क्षरण, राजनीतिक अस्थिरता जैसी अवांछनीय क्रियाएं करते है ताकि अपने विभिन्न लक्ष्यों को प्राप्त कर सके । इनका उद्देश्य सरकारी मशीनरी औन जनता में डर पैदा करना होता है ।"

अन्तर्राष्ट्रीय आतंकवाद :

अन्तर्राष्ट्रीय आतंकवाद की पृष्ठभूमि 1948 से प्रारम्भ मान सकते है और ब्रूस हाफमैन 22 जुलाई 1968 से आधुनिक आतंकवाद के प्रारम्भ मान सकते है । अन्तर्राष्ट्रीय आतंकवाद स्पष्ट अर्थों में वह आतंकवाद है, जिसका प्रभाव अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर होता है। अन्तर्राष्ट्रीय आतंकवाद का शिकार अन्तर्राष्ट्रीय उड़ाने रही है ।

पहली विमान घटना सन् 1930 में हुई थी । विश्व के समक्ष भूखमरी, गरीबी, अशिक्षा एवम् असमानता ने अन्याय के विभिन्न स्वरूपों को प्रकट किया है । अन्तर्राष्ट्रीय आतंकवाद इसी प्रतिक्रिया का परिणाम है। 11 सितम्बर 2001 को न्यूयार्क के पेंटागन एवं वर्ल्ड ट्रेड सेन्टर पर आतंकवादियों के हमने ने दक्षिण एशिया क्षेत्र में एक नए बदलाव को जन्म दिया ।[5] 26 नवम्बर 2008 में मुम्बई पर हुए धमाकों के बाद देश की आन्तरिक और बाह्यीय सुरक्षा पर प्रश्न चिह्न लग गया । भारत में जून 2009 से जून 2010 तक 749 आतंकी घटनाएं हुई । 10 सितम्बर 2011 को अफगानिस्तान के बारडाक प्रान्त में बमबारी की तथा 13 सितम्बर 2011 को काबुल स्थित अमेरिका दूतावास पर हमला कर दिया । विश्व के सभी देश शिखर सम्मेलनों के माध्यम से आतंकवाद के खिलाफ कार्यवाही करने का आह्वान करते रहते है । भारत की ओर से भी वर्ष 2009 के गुटनिरपेक्ष आन्दोलन के शिकार सम्मेलन में आतंकवाद के विरूद्ध भारतीय प्रधानमंत्री डॉ॰ मनमोहन सिंह ने आतंकवाद और वैश्विक मन्दी के मुद्दों को प्रमुखता से उठाया तथा आतंकवाद के सहयोगी व पक्षधर राष्ट्रों के खिलाफ कठोर कार्यवाही की मांग करते हुए सभी तरह के आतंकवाद की कठोर शब्दों में निन्दा की। उन्होंने इस सम्मेलन में सभी राष्ट्रों से एक साथ मिलकर इसके विरूद्ध कार्यवाही करने का आह्वान किया ।[6] नवम्बर 2015 में पेरिस में आतंकवादी हमला हुआ जिसमें लगभग 130 की मृत्यु हुई थी। इस आतंकवादी हमले की जिम्मेवारी Islamic State of Irqa and the Levant (ISIL) संगठन ने ली थी । वर्ष 2016 में पठानकोट व उरी में आतंकवादी हमला हुआ था । जिसकी जिम्मेवारी जैश-ए-मोहम्मद आतंकवादी संगठन ने ली थी । इस संगठन की जड़े पाकिस्तान के साथ-साथ कश्मीर में भी सक्रीय रूप

से मानी जाती है। इसके अलावा ईरान, इराक, यमन, लोबिया इत्यादि देशों में आतंकवादी संगठन आतंकवादी हमले करते रहते है । अब इन आतंकवादी संगठनों का ध्यान दक्षिण एशिया राष्ट्रों की ओर है।

निष्कर्ष :

राष्ट्रीय एकीकरण में आर्थिक असमानता, नक्सलवाद, साम्प्रदायिक घटनाएं इत्यादि राष्ट्रीय एकता को खतरा पहुंचाती है। जब तक उसे क्षेत्र के लोगों का सर्वांगीण विकास नहीं हो जाता, तब तक उस क्षेत्र में हिंसक घटनाएं आतंकवाद का रूप धारण कर सकती है। विश्व के सामने अशिक्षा, गरीबी, भूखमरी ये सभी समस्याएं आतंकवाद का परिणाम है। इन सभी समस्याओं के कारण आतंकवाद अन्तर्राष्ट्रीय आतंकवाद का रूप धारण कर लेता है जिससे विश्व के सभी देशों के सम्मुख राष्ट्रीय एकीकरण का प्रश्न उत्पन्न हो जाता है । राष्ट्रीय एकीकरण में बाधा पहुंचाने वाले बहुत से कारक है । अगर वर्तमान में देखा जाए तो आतंकवाद विश्व के सामने एक गंभीर समस्या बन चुकी है । 11 सितम्बर 2001 की घटना के पश्चात् विश्व का ध्यान अन्तर्राष्ट्रीय आतंकवाद की तरफ गया। अन्तर्राष्ट्रीय आतंकवाद के कारणों में राजनीतिक, आर्थिक, धार्मिक कारणों को लिया जा सकता है । कुछ आतंकवादी संगठन धार्मिक कट्टरता के आधार पर आतंक फैलाते है । कुछ आतंकवादी संगठनों के सदस्य आर्थिक परिस्थितियों के कारण आतंकवादी घटनाएं करते है । विश्व के कुछ ऐसे भी देश है जहां पर बच्चें को खाना तक नहीं मिलता और कुछ बच्चे कुपोषण का शिकार होकर मर जाते हैं । वहीं दूसरी विश्व के कुछ ऐसे देश भी है, जो हथियारों को खरीदने में बहुत रुपया खर्च करते है । यदि इन रुपयों को विश्व से संबंधित समस्याएं है। उनको दूर करने में लगा दिया जाए तो हो सकता है कि आतंकवाद के ऊपर

नियन्त्रण कुछ हद तक किया जा सकता है । अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर आतंकवाद से निपटने के लिए बहुपक्षीय समझौते होते है । लेकिन अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर आतंकवादली घाटनाएं होती रहती है । आतंकवादियों के जो वित्तीय स्त्रोत है और जो संस्थाएं उन आतंकवादियों को पैसा व हथियार उपलब्ध करवाती है । उनके ऊपर विश्व के सभी देशों को नियन्त्रण करना चाहिए । तभी आतंकवाद से निपटा जा सकता है ।

संदर्भ :

1. विद्युत चक्रवर्ती और राजेन्द्र कुमार पाण्डेय, 'आधुनिक भारतीय राजनीतिक चिन्तन', रावत पब्लिकेशन, जयपुर, 2012, पृ० 148
2. ओ०पी० नागपाल, 'राजनीतिक निबंध', किताबमहल, इलाहाबाद, 1964, पृ० 150-162
3. डॉ० अल्का गोयल, 'दक्षिण एशिया में आतंकवाद', राधा पब्लिकेशन, नई दिल्ली, 2013, पृ० 6-158
4. प्रो० मधुसूदन त्रिपाठी, 'राष्ट्रीय एकता और आतंकवाद', ओमेगा पब्लिकेशन, नई दिल्ली, 2011, पृ० 147-155
5. कृष्णानन्द शुक्ल, 'स्त्रोतेजिक वातावरण', राधा पब्लिकेशन, नई दिल्ली, 2008, पृ० 232
6. डॉ० सुदीप कुमार, 'गुटनिरपेक्ष आन्दोलन एवं सिंहावलोकन', ट्वटफिस्ट सेंचुरी पब्लिकेशन, पटियाला, 2012, पृ० 96